

# NEXT IAS

## दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

---

बढ़ते ऋण से निपटने का समय

---

[www.nextias.com](http://www.nextias.com)

## बढ़ते ऋण से निपटने का समय

### सन्दर्भ

- भारत का ऋण-से-GDP अनुपात एक बढ़ती हुई चिंता का विषय रहा है, जो वैश्विक और उभरते बाजार दोनों के औसत से अधिक हो गया है। आर्थिक स्थिरता और सतत विकास सुनिश्चित करने के लिए केंद्र एवं राज्य दोनों सरकारों के ठोस प्रयास की आवश्यकता है।

### भारत के ऋण-से-GDP अनुपात के बारे में

- 2024 तक, भारत का ऋण-से-GDP अनुपात लगभग 83.1% है। यह महामारी-पूर्व स्तरों से एक महत्वपूर्ण वृद्धि दर्शाता है, जहां 2018 तक अनुपात 69% के आसपास था।
- सार्वजनिक ऋण में वृद्धि मुख्य रूप से महामारी के आर्थिक प्रभाव को कम करने के लिए बढ़े हुए सरकारी व्यय से प्रेरित थी, जिसमें संकट के दौरान अनुपात 90% के शिखर पर देखा गया था।
- **केंद्र सरकार का ऋण:** मार्च 2024 तक, केंद्र सरकार का बकाया ऋण ₹173 लाख करोड़ था, जो मार्च 2020 में दर्ज ₹86 लाख करोड़ से दोगुने से भी अधिक है।
  - 2024-25 के लिए राजकोषीय घाटे को सकल घरेलू उत्पाद के 4.9% तक सीमित करने के प्रयासों के बावजूद, मार्च 2025 तक ऋण बढ़कर ₹181.6 लाख करोड़ होने की संभावना है।
- **राज्य सरकार का ऋण:** राज्य सरकारें भी राष्ट्रीय ऋण में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं, जो कुल सार्वजनिक ऋण का 33% है। वित्त वर्ष 24 के अंत में उनकी बकाया देनदारियां ₹82.2 लाख करोड़ थीं।

### वैश्विक औसत के साथ तुलना

- वैश्विक स्तर पर, सार्वजनिक ऋण बढ़ रहा है, ऋण-से-GDP अनुपात 2019 में 83.9% से बढ़कर 2024 में 93.2% हो गया है।
- भारत का वर्तमान ऋण-से-GDP अनुपात उभरते बाजार और मध्यम-आय अर्थव्यवस्थाओं के औसत से अधिक है, जो लगभग 70% है।
- हालाँकि, यह अभी भी संयुक्त राज्य अमेरिका और जापान जैसी कुछ उन्नत अर्थव्यवस्थाओं से कम है, जिनका ऋण-से-GDP अनुपात क्रमशः 121% और 251% है।
  - उदाहरण के लिए, अमेरिकी संघीय सरकार का ऋण बढ़कर 36 ट्रिलियन डॉलर हो गया है, जिससे वैश्विक सार्वजनिक ऋण 100 ट्रिलियन डॉलर के करीब पहुंच गया है।

### भविष्य की संभावनाएँ

- अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) का अनुमान है कि भारत का ऋण-से-GDP अनुपात वित्त वर्ष 2015 में 82.3% पर पहुंच जाएगा और वित्त वर्ष 2019 तक धीरे-धीरे घटकर 80.5% हो जाएगा।
- यह अनुमान निरंतर आर्थिक सुधार और राजकोषीय समेकन प्रयासों की धारणाओं पर आधारित है।

### उच्च ऋण के परिणाम

- उच्च ऋण स्तर कई नकारात्मक परिणामों को उत्पन्न सकता है, जिसमें उच्च उधार लेने की लागत, मुद्रा बाजार अस्थिरता और बढ़ी हुई मुद्रास्फीति की उम्मीदें शामिल हैं। ये कारक आवश्यक क्षेत्रों पर सरकारी व्यय को कम कर सकते हैं, अंततः आर्थिक विकास को प्रभावित कर सकते हैं।

## ऋण स्तर में योगदान देने वाले कारक

- **राजकोषीय घाटा:** राजकोषीय घाटे पर रोक लगाने की कोशिशों के बावजूद यह एक चुनौती बनी हुई है। 2024-25 के लिए राजकोषीय घाटा सकल घरेलू उत्पाद का 4.9% अनुमानित है।
- **अधिक उधार:** सरकारें विभिन्न व्ययों को पूरा करने के लिए उधार लेती हैं जिन्हें वे करों और अन्य राजस्व के माध्यम से पूरा करने में असमर्थ हैं।
  - सरकारें उस पैसे पर ब्याज का भुगतान करने के लिए भी उधार ले सकती हैं जो उन्होंने पिछले व्ययों को निधि देने के लिए पहले ही उधार ले लिया है।
  - भारत में सार्वजनिक ऋण मुख्य रूप से निश्चित ब्याज दरों पर अनुबंधित होता है, जिसमें फ्लोटिंग आंतरिक ऋण मार्च 2022 के अंत में सकल घरेलू उत्पाद का केवल 1.9% होता है।
- **सार्वजनिक स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा से संबंधित व्यय:** सबसे स्पष्ट कारण कोविड-प्रेरित व्यवधान है जिसने राजस्व में कमी के बीच सरकारों को अतिरिक्त सार्वजनिक स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा शुद्ध व्यय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अधिक उधार लेने के लिए मजबूर किया।
- **उच्च मुद्रास्फीति:** 2020 से आर्थिक विकास में उछाल और उम्मीद से कहीं अधिक मुद्रास्फीति के बावजूद, सार्वजनिक ऋण उच्च बना हुआ है।
  - राजकोषीय घाटे ने सार्वजनिक ऋण के स्तर को ऊंचा रखा, क्योंकि कई सरकारों ने विकास को बढ़ावा देने और खाद्य एवं ऊर्जा की कीमतों में बढ़ोतरी का जवाब देने के लिए अधिक व्यय किया, यहां तक कि उन्होंने महामारी से संबंधित राजकोषीय समर्थन भी समाप्त कर दिया।
- **कर राजस्व में गिरावट:** व्ययों का एक बड़ा हिस्सा (ब्याज भुगतान, पेंशन, प्रशासनिक व्यय आदि) और बढ़ते सब्सिडी भार का मतलब है कि राज्य केंद्रीय हस्तांतरण पर अत्यधिक निर्भर थे।
  - राजस्व में गिरावट और व्यय में वृद्धि का तात्पर्य ऋण में तेज वृद्धि है।
- **राज्य ऋण:** राज्य सरकारें भी कुल ऋण भार में योगदान करती हैं, जो कुल सार्वजनिक ऋण का लगभग 33% है।
- **महामारी प्रतिक्रिया:** COVID-19 महामारी के दौरान स्वास्थ्य देखभाल और कल्याण उपायों पर सरकार के बढ़े हुए व्यय से सार्वजनिक ऋण में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

## राजकोषीय अनुशासन: भारत में उच्च ऋण-से-GDP अनुपात का प्रबंधन

- आर्थिक नीति के क्षेत्र में, दीर्घकालिक आर्थिक स्थिरता और विकास सुनिश्चित करने के लिए राजकोषीय अनुशासन बनाए रखना सर्वोपरि है। इसमें दीर्घकालिक आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए सरकारी व्यय और राजस्व सृजन के बीच संतुलन बनाए रखना शामिल है।
- **राजकोषीय अनुशासन के मानदंड के रूप में सख्त राजकोषीय घाटे का पालन करना:** राजकोषीय घाटा उधार को छोड़कर सरकार के कुल व्यय और इसकी कुल प्राप्तियों के बीच के अंतर को दर्शाता है। सतत आर्थिक प्रबंधन के लिए सख्त राजकोषीय घाटे की सीमा का पालन करना महत्वपूर्ण है।
  - 2024-25 के केंद्रीय बजट के अनुसार, वित्त मंत्री ने 2024-25 में अपने बजटीय स्तर 4.9% से राजकोषीय घाटे को 2025-26 तक सकल घरेलू उत्पाद के 4.5% तक कम करने के लक्ष्य की घोषणा की। यह आर्थिक स्थिरता बनाए रखने में राजकोषीय समेकन के महत्व को रेखांकित करता है।
- **सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP):** बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के लिए PPP को प्रोत्साहित करने से निजी क्षेत्र के निवेश और विशेषज्ञता का लाभ उठाने में सहायता मिल सकती है, जिससे सरकार पर वित्तीय भार कम हो सकता है।

- **गैर-कर स्रोतों से राजस्व बढ़ाना:** गैर-कर स्रोतों से राजस्व बढ़ाने के मार्ग खोजना, जैसे सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों में विनिवेश और सरकारी संपत्तियों का मुद्रीकरण।
- **आर्थिक विकास को बढ़ावा देना:** आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने वाली नीतियों को लागू करना, जैसे व्यापार करने में आसानी में सुधार, मानव पूंजी में निवेश और नवाचार को बढ़ावा देना, समग्र राजस्व आधार को बढ़ा सकता है।
- **संरचनात्मक सुधार:** ये अर्थव्यवस्था के कामकाज में सुधार के लिए राजकोषीय, वित्तीय या व्यापार नीतियों में बदलाव हैं। वे आर्थिक विकास को बढ़ाने और सार्वजनिक ऋण को कम करने में सहायता कर सकते हैं।

### 3% राजकोषीय घाटे की सीमा का मामला

- अर्थशास्त्री और नीति निर्माता राजकोषीय अनुशासन के मानदंड के रूप में सकल घरेलू उत्पाद के 3% की राजकोषीय घाटे की सीमा का समर्थन करते हैं।
- इसे सतत और प्रबंधनीय माना जाता है, जो सरकार को अत्यधिक उधार का सहारा लिए बिना अपनी व्यय आवश्यकताओं को पूरा करने की अनुमति देता है।
- घरेलू वित्तीय बचत के वर्तमान निम्न स्तर को देखते हुए इस सीमा को बनाए रखना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जो निवेश योग्य अधिशेष के उपलब्ध पूल को कम कर देता है।

### नीति अनुशासण

- **राजस्व सृजन में वृद्धि:** कर अनुपालन में सुधार और कर आधार को व्यापक बनाने से सरकारी राजस्व में वृद्धि हो सकती है।
  - GST की शुरुआत इस दिशा में एक कदम है, लेकिन इसकी दक्षता बढ़ाने के लिए और सुधारों की आवश्यकता है।
- **व्यय को तर्कसंगत बनाना:** आवश्यक व्ययों को प्राथमिकता देना और गैर-आवश्यक व्ययों में कटौती करना राजकोषीय घाटे को प्रबंधित करने में सहायता कर सकता है। इसमें सब्सिडी का बेहतर लक्ष्यीकरण और सार्वजनिक व्यय की दक्षता में सुधार शामिल है।
- **राजकोषीय उत्तरदायित्व कानून को मजबूत करना:** राजकोषीय लक्ष्यों का पालन सुनिश्चित करने के लिए राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंधन (FRBM) अधिनियम को मजबूत करना। इसमें स्पष्ट और प्राप्त करने योग्य राजकोषीय घाटे के लक्ष्य निर्धारित करना एवं राजकोषीय संचालन में पारदर्शिता सुनिश्चित करना शामिल है।

### राजकोषीय उत्तरदायित्व बजट प्रबंधन (FRBM) अधिनियम, 2003

- यह सरकार के लिए राजकोषीय स्थिरता प्राप्त करने के लक्ष्य निर्धारित करता है।
- इसमें प्रस्तावित किया गया कि राजस्व घाटा, राजकोषीय घाटा, कर राजस्व और कुल बकाया देनदारियों को मध्यम अवधि के राजकोषीय नीति विवरण में सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के प्रतिशत के रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए।
- यह RBI के लिए आवश्यक लचीलेपन के प्रावधान प्रदान करता है:
  - मुद्रास्फीति से निपटें;
  - सार्वजनिक धन के प्रबंधन में सुधार;
  - राजकोषीय अनुशासन को मजबूत करना और राजकोषीय घाटे को कम करना;
- इसे वार्षिक रूप से लगाना अनिवार्य कर दिया गया है:

- केंद्रीय बजट दस्तावेज़;
- मध्यम अवधि की राजकोषीय नीति वक्तव्य;
- समष्टि आर्थिक रूपरेखा वक्तव्य; और
- संसद में राजकोषीय नीति रणनीति वक्तव्य।
- इसके लिए केंद्र सरकार को अपने राजकोषीय घाटे को नाममात्र सकल घरेलू उत्पाद के केवल 3% तक सीमित रखना होगा।
  - हालाँकि, 2007-08 को छोड़कर, भारत कभी भी इस लक्ष्य को पूरा नहीं कर पाया है।

### निष्कर्ष और आगे की राह

- भारत का ऋण-से-GDP अनुपात हाल के वर्षों की आर्थिक चुनौतियों और नीति प्रतिक्रियाओं को दर्शाता है। जबकि वर्तमान स्तर चिंता का कारण है, राजकोषीय समेकन और आर्थिक सुधार के लिए सरकार की प्रतिबद्धता स्थायी ऋण स्तरों की दिशा में एक रास्ता प्रदान करती है।
- बढ़ते ऋण से निपटने के लिए एक स्पष्ट और कठोर कार्य योजना आवश्यक है। वित्त मंत्री ने आने वाले वर्षों में ऋण-से-GDP अनुपात को कम करने का वादा किया है, लेकिन इसके लिए केंद्र और राज्यों दोनों के समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है।
- उपायों में कर संग्रह में सुधार, अनावश्यक व्यय को कम करना और सतत नीतियों के माध्यम से आर्थिक विकास को बढ़ावा देना शामिल हो सकता है।
- दीर्घकालिक राजकोषीय स्वास्थ्य और आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए निरंतर सतर्कता एवं सक्रिय नीतिगत उपाय आवश्यक होंगे।

Source: BL

### दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

**प्रश्न.** क्या आप मानते हैं कि भारत का बढ़ता ऋण स्तर इसके दीर्घकालिक आर्थिक विकास और स्थिरता के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा है? आवश्यक सार्वजनिक सेवाओं और बुनियादी ढांचे के विकास को बनाए रखते हुए बढ़ते ऋण के भार को दूर करने के लिए कौन से विशिष्ट नीतिगत उपाय लागू किए जाने चाहिए?